मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● सलंग अंक १५७ ● अगस्त-२०२०

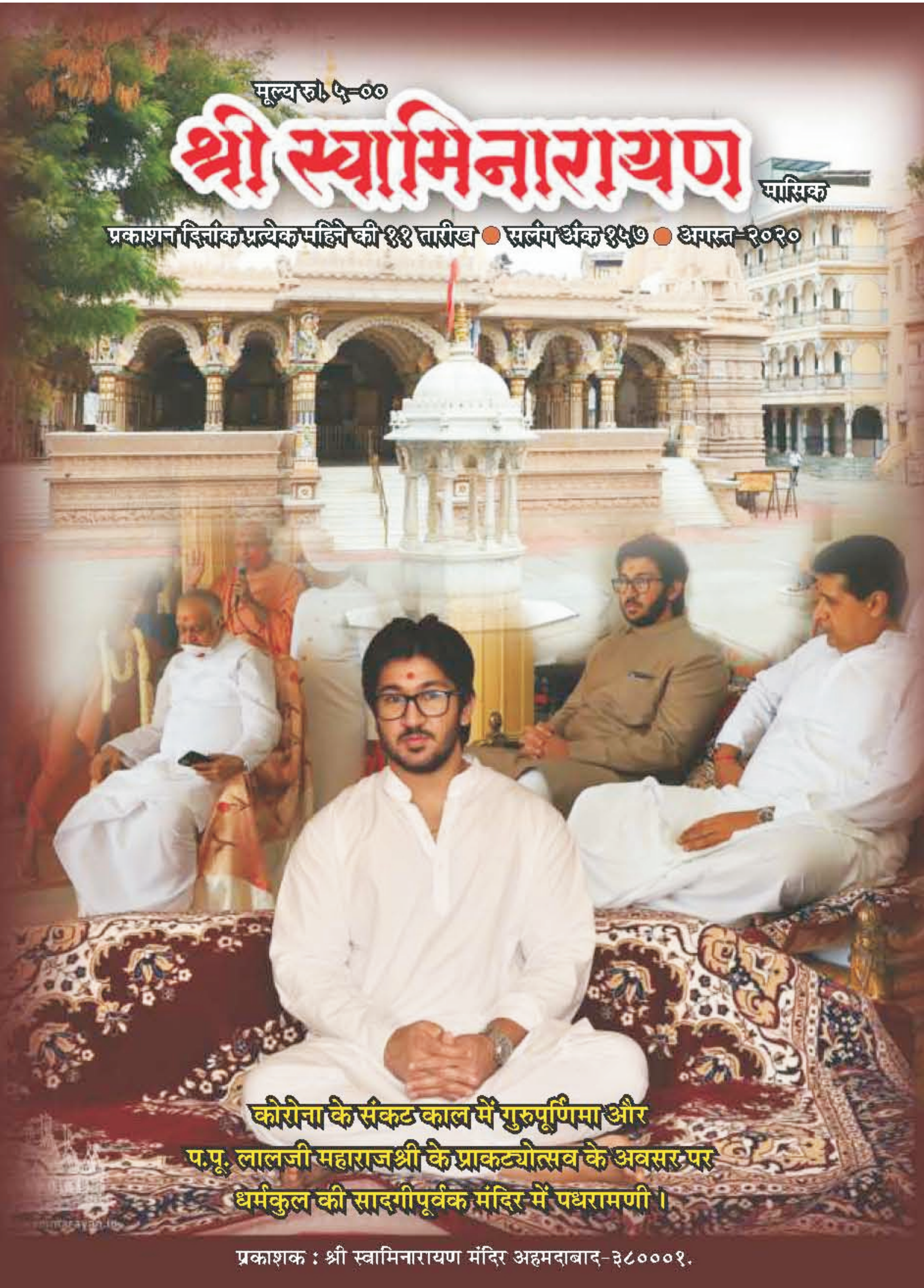

कोरोना के संकट काल में गुरुपूर्णिमा और
प.पू. लालजी महाराजश्री के प्राकट्योत्सव के अवसर पर
धर्मकुल की सादगीपूर्वक मंदिर में पधरामणी ।

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

पवित्र श्रावण महीने में अपने अनेक मंदिरो में हिंडोला दर्शन ।

अहमदाबाद

जेतलपुर

धोलका

नारणपुरा

कांकरिया

माणसा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १४ • अंक : १५७

अगस्त-२०२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ • फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष [illegible] • प्रति कॉपी [illegible]

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्री सहजानन्द स्वामी की स्तुति	०६
०४.	चातुर्मास	१२
०५.	श्रीहरि के तीन अपर स्वरुपो के मुख से गुरु पूर्णिमा (२०२०) संदेशरुपी आशीर्वचन	१४
०६.	पुल्हाश्रम की यात्रा अर्थात जीवन की सर्वश्रेष्ठ यात्रा	१६
०७.	"म्यूजियम को देखने नही म्युजियम के दर्शन हेतु जाना है"	१८
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१९
०९.	सत्संग बालवाटिका	२१
०९.	भक्ति सुधा	२३
१०.	सत्संग समाचार	२६

अस्मदीयम्

श्री शिक्षापत्री में भगवान श्री स्वामिनारायणने सभी आश्रितो को चातुर्मास वर्षाकाल के चार महीने में विशेष नियम धारण करके भगवान खुश हो । ऐसा भक्ति भजन करने की आज्ञा प्रदान किये है । जो आज के समय में उस आज्ञा का पालन करने का अच्छा वातावरण प्राप्त हुआ है । इस में विशेष धर्म भक्ति ज्ञान वैराग्य के साथ महानता युक्त पराभक्ति का सहारा लेकर जीव अपने मोक्ष का मार्ग प्रशस्त्र कर लेना चाहिए । यही मानव जीवन की कलियुग में सार्थकता है । अथवा अत्याधिक ज्ञानी, विद्वान लोगो का क्या होता है । उसको भगवान स्पष्टता पूर्वक जो स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के ११४ वें श्लोक में इस प्रकार आज्ञा किये है । गुणिनां गुणवत्ताया ज्ञेयं ह्येतत् परं फलम् । कृष्णे भक्तिश्य सत्संगो अन्यथा विदो अधः संसार के जीवो में जितने भी शुभ गुण है । वे सभी सद्‌गुणो के फल ही । उसमें सर्वावतारी परम ब्रह्म परमात्मा के अनादि दिव्य रुप के आगमन से ही सद्‌गुणो की सार्थकता है । अन्यथा भक्ति के विना मोक्ष प्राप्ति भगावन के अविनाशी अक्षरधाम की प्राप्ति नही है । अक्षरधाम के प्राप्ति के बिना जन्म मृत्यु के फेरे से कल्याण नही होता है । इतनी सी बात को हम सभी समझकर जितना अधिक समय मिले भक्ति में उपयोग कर लेना चाहिए । इस में ही भगवान श्री स्वामिनारायण की पूरी खुशी है । दृढता पूर्वक मन में प्रतिज्ञा करले यही जीव मात्र का परम कर्तव्य है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०२०)

५ अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा के दिन कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की आरती उतारे दर्शन किये। सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में समस्त सत्संग को प्यारा आशीर्वाद दिये थे।

१५ प.पू. १०८ श्री लालजी महाराजश्री के जन्मोत्सव अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सभा में आये। सभी संत-एवम् हरिभक्तो की शुभेच्छा में सबको अन्तकरण से आशीर्वाद दिये थे।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०२०)

५ अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा के दिन कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की आरती उतारे तथा दर्शन किये। सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. आचार्य लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य पूरे सत्संग के लिये प्रेम भरा आशीर्वाद दिये थे।

१५ अषाढ वद-१० अपने जन्मोत्सव के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का दर्शन किये। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ शभा में आये तीर्थोस्तानो से आये पूज् यसंतो महंतो के शुभेच्छा को स्वीकार करके शुभ आशीर्वाद दिये थे।

श्री सहजानंद स्वामीनी स्तुति

- महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (कालुपुर, अमदावाद)

॥ मंगलाचरण ॥

पातुं धर्ममधर्ममुत्खनयितुं श्रीभक्तिधर्मांगतो । जातायोत्तरकोसलेषु दयया सर्वेश्वराय च ॥
तृप्तिं वाक्यसुधारसैर्विदधते नैजैर्निजानां । मुहुस्तस्मै श्रीहरये नमोस्तु सहजानंदाय सद्वर्णिने ॥१॥
श्रीमन्नूतननीरदाभतनवे श्रीमाधुरीमूर्तये । त्वंगतुंगतरंगसंगिवृत्तये चञ्च्चच्चलद्वाससे ॥
नानाहार मनोहराय हरये यष्ट्या लसतपाणये । तस्मै श्रीगुरुवेऽभवाय सहजानंदाय वन्दामहे ॥२॥
श्रीमत्केतुयवाष्टकोणकमलस्वस्त्यूर्ध्वरे खासृणिभ्राजज्जम्बुफलाशनिश्रितलसद्दक्षाघ्रिमब्जप्रभम ॥
मत्स्यार्धेन्दुधनुस्त्रिकोणकलशव्योमोल्लसद्गोपदजुष्टादक्षपदं । स्मरामि सहजानंदं सदा तं मुदा ॥३॥
श्री धर्मधुरन्धरं सुखरं कारुण्यपाथोनिधिं सन्नाथ । निगमान्तगीतयशसं पाथोदनीलप्रभम् ॥
धर्मस्थीकृतभूतलं स्वमहसा धर्मात्मजं स्वामिनं । सदाधाम्नः पतिमक्षरस्य सहजानंदं हरिं तं भजे ॥४॥
यो भूमेरुदडीडयत्स्वमहसा वात्येव तुलं । सुरामांसप्राशमयोपधर्ममभितः कार्ष्णं वृषं पोषयन् ॥
स्वैश्वर्य समपप्रथल्लघु नृणां स्वान्तासुरोधाद्धरौ । श्रीस्वामी जयतीश्वरः स सहजानंदो ममानंददः ॥५॥
श्रीकृष्णाय तमोहराय हरये श्रीनीलकण्ठाय ते । श्रीनारायणनामधेयधृतये धर्मात्मजायाऽऽत्मने ॥
सद्धर्मावनसम्भवाय हरियुककृष्णाभिधायानिशं । षण्णामावलिसंयुताय सहजानंदाय वन्दामहे ॥६॥
परं तीर्थस्थानं ध्वजयवसरोजांकुशनभो । धनूरेखार्धेन्दुप्रभृतिशुभलक्ष्मांकितमपि ॥
श्रिया जुष्टं तद्यत्प्रणतजनपापप्रशमनं । पदाब्जं ते स्वामिन् वसतु सहजानंद ह्रदि मे ॥७॥
सर्वेषां पतिरात्मदः प्रभुरनंतेहोऽक्षरे संस्थितः । कारुण्येक्षण नीरजः सुखनिधिः सर्वज्ञईशः परः ॥
कल्याणऽमित दिव्यजन्मचरितोयो ब्रह्मणेऽध्यायपयद्वैदास्तं । प्रणमाम्यहं च सहजानंदं सदा धर्मजम् ॥८॥
यं ब्रह्मेश्वरदेवराज रवयो दिव्यैस्तुवन्ति स्तवैर्यं । वेदैः क्रमतः पदैश्चजटया गायन्ति सामर्षयः ॥
ध्यानेनात्मनी यंमहे प्रतिदिनं पश्यन्ति योगेश्वरायत्पारं । निगमां विदुर्न सहजानंदाय तस्मै नमः ॥९॥
कश्यैकस्य कुमंडलं हि शिरशः शेषश्य देशेस्थितं । यस्येदं फणिनः सहस्त्रशिरसां सिद्धार्थवद्राजते ॥

सोप्यस्यैश्च सहस्रशः प्रतिदिनं नूलानि यन्नामन्याह । सिताम्बराय सहजानंदाय तस्मै नमः ॥१०॥
ख्यातं धर्मकुलं गुणैर्भुविवरै यश्चाविरासीत्ततः कर्तुं । सद्विजतो यथा शशधर पूर्वाचलं पुष्कलः ॥
यस्यासन्मुनयोपि शुद्ध हृदय धन्याश्च सत्संगिन । संबन्धात्सततं समेऽस्तु सहजानंद प्रसन्नो हरिः ॥११॥
अतिक्षान्त्या दान्त्या मृदुलवचनैश्छादितमह । न्निजातकयैश्वर्या दद्विलसितनृनाट्यय गुरवे ॥
वसानाय श्वेताम्बरयुगलमावार्धियशसे । नमस्तस्मै नित्यं हृदि भगवते ध्येयवपुषे ॥१२॥

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति परब्रह्म परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण इस भूमंडल के उपर मानव शरीर धारण करके माता प्रेमवती भक्तिदेवी और पिता हरिप्रसाद विप्र धर्मदेव के आगन में प्रगट हुए । और चिरंजीवी महामुनि मार्कण्डेय मुनिने चार नाम रखे। हरि, कृष्ण, हरिकृष्ण और नीलकंठ ग्यारह वर्ष तक माता-पिता की सेवा में रहे । बाद में मातृ-पितृ ऋण में से मुक्त होकर महाभिनिष्क्रमण किये थे । सात वर्ष तक महावन में विचरण करके उद्ध्वावतार श्री रामानंद स्वामी के पास आये । तब भागवती महादीक्षा धारण करके सहजानंद स्वामी और नारायणमुनि ऐसे दो नाम को धारण किये। तब से पाँच सौ परमहंसो श्रीहरिने उन में से श्री सहजानंद स्वामी के नाम से सभी को परिचय देते और स्वयं नंद संत उस नाम से श्रीहरि की स्तुति प्रार्थना अपनी रचनाओ में हंमेशा करते थे । उसमें से कई रचनाओ में से इस स्तुति के प्रार्थना के श्लोक है। इनके भाव का अर्थ समझे।

पातुं धर्ममधर्ममुत्खनयितुं श्रीभक्तिधर्मांगतो ।
जातायोत्तरकोसलेषु दयया सर्वेश्वराय च ॥
तृप्तिं वाक्यसुधारसैर्विदधते नैजैर्निजानां । मुहुस्तस्मै
श्रीहरये नमोस्तु सहजानंदाय सद्वर्णिने ॥१॥

भगवान श्रीहरि के पाँच नंद संतो सद्गुरु श्री मुक्तानंद स्वामी, सद्गुरु श्री गोपालानंद स्वामी, सद्गुरु श्री ब्रह्मांद स्वामी, सद्गुरु श्री नित्यानंद स्वामी और सद्गुरु श्री शुकानंद स्वामीने उनके कहे वचनामृत जो समग्र सम्प्रदाय में विचरण के अवसर पर गाँव-गाँव में और नगर-नगर में भक्तो के विशाल सभा में उपदेश दिये है। ऐसे अमृतमय वचनो को सहायक संत याद रखने के लिये लिख लेते थे। एकत्रित करके भाषा शुद्धि के साथ सम्पूर्ण वचन को संग्रहित करने का आदेश दिये थे । पाँचो संत मिलकर आज्ञा का पालन करने हेतु २७३ की शुभ संख्या में वचनामृत सम्प्रदाय में प्रसिद्ध है । उसका संपादन करने से पूर्व यह कार्य निर्विघ्न पूरा हो इस उद्देश्य से श्रीहरि की प्रार्थना रुप में मंगलाचरण करते है। यह संस्कृत में श्लोक रुप में है। भयानक कलिकाल में व्याप्त हिंसा, क्रुरता, माँस, मदिरा का सेवन, जुगार और व्यभिचार दुष्कर्म रुपी अधर्म और धर्म के नाम पर दम्भ आडम्बर और अंधविश्वास में फँसे भोले और निर्दोष मानव एवम् धर्म की रक्षा हेतु अधर्म का नाश करने हेतु श्री धर्मदेव और भक्तिदेवी को अपना माता-पिता बनाकर मानव शरीर धारण करके उत्तर कोशल देश जो सूर्य गंगा के किनारे स्थित छोटा छपैया नामक गाँव में सभी ईश्वरो के ईश्वर मूर्ति जीवो के उपर दया करुणा करने प्रगट हुए । वे परमब्रह्म परमात्मा के भवसागर से पार करने वाले अमृतमय दिव्य वचनो से अपने आश्रित ऐसे परम एकान्तिक परमहंस साधुजन सात्विक ऐसे भक्तजन बार-बार उसमें रहे अज्ञान, संशय को अपने अमृतमय रसमय वाक्येय से तृप्त करके संशय रहित करके महामोक्ष के अधिकारी बनाते है। ऐसे संसार में जीव मात्र को सहज में अक्षरब्रह्म का आनंद देने वाले और सदा श्रेष्ठवर्णि नैष्ठिक ब्रह्मचारी की तरह शांत सात्विक सफेद वस्त्र धारण करने वाले भगवान श्रीहरि महाप्रभु

श्री सहजानंद स्वामी के चरणो में हम साष्टांग दण्डवत प्रणाम युक्त नमस्कार करते है।(१)

स्वैश्वर्य समपप्रथल्लघु नृणां स्वान्तासुरोधाद्धरौ ।
श्रीस्वामी जयतीश्वरः स सहजानंदो ममानंददः ॥५॥

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतारो के अवतारी परमब्रह्म परमेश्वर भगवान श्रीहरि सहजानंद स्वामी इस पृथ्वी पर प्रगट होकर मनुज रुप लेकर विचरण कर रहे थे। तब वह अपने प्रताप से भयानक तूफान को अपने जटा में रखकर शांत कर देते थे। उसी प्रकार अपने अलौकिक दिव्य प्रताप से भगवान श्रीहरि ने कई समुदाय के लोको को व्यसन मुक्त करके सात्विक मानव बनाये थे। कई अमान्य धारणाओ को दूर किये। जैसे देवी-देवताओ के सामने पशु हिंसा पर रोक लगाये थे। मंत्र-तंत्र तथा अन्य भूतप्रेत जैसी अंधविश्वास से मनुष्यो को बाहर लाये। सच्चे धर्मका ज्ञान दिये थे। तथा सद्धर्म के प्रति रुझान पैदा किये थे। ये कार्य सभी वर्गो के लिये समत्व भाव से किये थे। सबको समान लाभ दिय थे। उनके पास आये धाम से अधम व्यक्ति का कल्याण किये थे। शांति का रास्ता बताये थे। ऐसे हमारे आराध्य प्रभु श्रीहरि सहजानंद स्वामी की सभी जगह पर जय-जयकार हो रही है। (५)

श्रीकृष्णाय तमोहराय हरये श्रीनीलकण्ठाय ते ।
श्रीनारायणनामधेयधृतये धर्मात्मजायाऽऽत्मने ॥
सद्धर्मावनसम्भवाय हरियुककृष्णाभिधायानिशं ।
षण्णामावलिसंयुताय सहजानंदाय वन्दामहे ॥६॥

इस स्वपन रुपी संसार में माया के धने अंधकार में दुःख भोगते जीवो के हृदय में से अहम्, ममत्वरुपी अज्ञान तमोगुण का प्रभाव, जन्म-मृत्यु के भय से मुक्त करके त्रिगुणात्मिका के प्रभाव से बाहर निकाल कर माया मे प्रवेश करके मानव रुप धारण किये है। और जिसका श्रीकृष्ण जैसा सार्थक नाम महामुनि मार्कण्डेय ऋषिने रखा है। सभी आश्रित भक्तो और शरणागते जीव के कष्टो को हरने वाले हरि जिनका वास्तविक नाम है। वे प्रभु संसार के जीवो को स्वयं

आचरण करके कठोर तपस्या किये है । नीलकंठ श्रेष्ठ नाम स्वीकार किये है । वही परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरि पुरुषोत्तम नारायण स्वयं श्री स्वामिनारायण षडक्षरी दिव्य नाम धारण करने वाले स्वयं है । वे स्वयं परमेश्वर धर्मदेव के पुत्र रुप में प्रगट होकर सद्धर्म भागवत धर्म की सम्भावना करने तथा उनकी रक्षा करने और उसे पुनः परिकृत परिशुध्ध करने और कृष्ण नाम धारण करके ऐसे हरिकृष्ण श्रेष्ठ नामो से युक्त मेरे इष्टदेव भगवान श्रीहरि सहजानंद स्वामी के श्रीचरणो में साष्टांग प्रणाम वंदन करता हूँ।(६)

परं तीर्थस्थानं ध्वजयवसरोजांकुशनभो ।
धनूरेखार्धेन्दुप्रभृतिशुभलक्ष्मांकितमपि ॥
श्रिया जुष्टं तद्यत्प्रणतजनपापप्रशमनं । पदाब्जं ते
स्वामिन् वसतु सहजानंद हृदि मे ॥७॥

जिसके श्रीचरणो में सम्पूर्ण तीर्थस्थल निवास करते है । तीर्थत्व के कारण जो सोलह प्रतीक उस में से एक ध्वज का निशान राष्ट्र के निशान की तीर्थत्व प्रतीक है । जब अन्न का प्रतीक, सरोवर में उत्पन्त कमल, अंकुश और आकाश का चिन्ह, धनुष, उर्ध्वरेखा, चंद्र जो सामुहिक शास्त्र में वर्णित शुभ प्रतिक जिनके चरणो में विराजमान है । जिसके चरणो की सेवा में सदा लक्ष्मीजी लगी रहती है । शरणागत भक्तो की पाप कर्म का नाश करके मोक्ष प्रदान करते है । ऐसा जिसके चरणो में सामर्थ्य है । वे हमारे इष्टदेव प्रभु सहजानंद स्वामी हमारे हृदय में सदैव निवास करे । ऐसी नम्र प्रार्थना करता हूँ । (७)

सर्वेषां पतिरात्मदः प्रभुरनंतेहोऽक्षरे संस्थितः ।
कारुण्येक्षण नीरजः सुखनिधिः सर्वज्ञईशः परः ॥
कल्याणऽमित दिव्यजन्मचरितोयो
ब्रह्मणेऽध्यायपयद्वैदास्तं । प्रणमाम्यहं च सहजानंदं सदा
धर्मजम् ॥८॥

भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा से पाँच सौ परमहंस सम्प्रदाय से युक्त सत्शास्त्रो की रचना करने में लग गये थे । जिसे जिस भाषा का ज्ञान था । वह उस भाषा में संसार के जीव कल्याण हेतु समझने वाले ग्रन्थ लिखने लगे । उसी क्रम में सद्गुरु महानुभावानंद स्वामी ने अपने ग्रन्थराजश्री हरिकृष्ण लीलामृत में अपने ईष्टदेव की जो वंदना किये है । उनके शब्दो के भावार्थ समझने का प्रयास करेगे । परमब्रह्म परमेश्वर अनंत कोटी ब्रह्मांड के समस्त विश्व के पति नियंता स्वामी अन्तर्यामी जीव आत्मा को अपना स्वरुप का ज्ञान देने तथा पहचानने नियमन करने वाले विश्व के अनंत ब्रह्मांड के अनन्त रुप धारण करने के बाद भी अपने दिव्य अक्षरधाम मे सदैव दिव्य और द्विभुजा साकार मूर्ति में विराजमान भगवान विशाल कलम नयमन से दया-करुणा की दृष्टि से सभी दुखी को देखकर आप सब ज्ञात कर लेते है । जो सर्व व्यापक है । लेकि सभी लोग ज्ञान नही कर सकते है । अर्थात् सबसे पहे है । स्वयं अजन्मा है । कर भी जीवो के कल्याण हेतु दिव्य चरित्र करने के लिये पृथ्वी पर जन्म धारण किये है । सबसे पहले प्रगट होकर पितामह ब्रह्माजी को वेदो का दिव्य ज्ञान दिये थे । वही पुरुषोत्तम भगवान श्रीहरि धर्मदेव के पुत्र रुप में अवतार लेकर श्री सहजानद स्वामी के नाम से विचरण करते है । उनके श्रीचरणो की में साष्टांग प्रणाम - दंण्डवत करता हूँ।(८)

यं ब्रह्मेश्वरदेवराज रवयो दिव्यैस्तुवन्ति स्तवैर्यं । वेदैः
क्रमतः पदैश्श्जटया गायन्ति सामर्षयः ॥
ध्यानेनात्मनी यंमहे प्रतिदिनं पश्यन्ति योगेश्वरायत्पारं ।
निगमां विदुर्न सहजानंदाय तस्मै नमः ॥९॥

श्रीमद् सत्संगिभूषण भक्ति शास्त्र में वासुदेवानंद वर्णी व्यापकेश नाम के महामुनि के मुख से अपने ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण जो वर्तमान मे कलिकाल में श्री सहजानंद स्वामी नाम धारण करके भूमंडल पर विचरण कर रहे है । उनके रुप का वर्णन स्तुति करते

कहते है । हमारे ईष्टदेव परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण के जगत के सृष्टा पितामह ब्रह्माजी ईश्वर मूर्ति महादेवजी शिवजी तीनो लोको के प्रति देवताओ के राजा इन्द्र, संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्यतथा अन्यदेव दिव्य स्वरुप वेद की श्रुतियाँ मंत्र और सूक्तो से स्तुति प्रार्थना करते है । विद्वान ब्राह्मण, पंडित सामवेद के गीतो के पद क्रम और जटाये सहित गान करते है । जिसके स्वरुप को सनकादिक चार कुमार योगेश्वर, सिद्ध ऋषि मुनि तेजोमय अपने आत्मस्वरुप में अन्तर्यामी रुप को प्रतिदिन हृदय में दर्शन करते है । जिसकी महिमा पूर्णतया वेदकी श्रुतियाँ भी पूरी नही कर पाती है । ऐसे सहजानंद नाम से विचरण करने वाले हमारे ईष्टदेव प्रभु को मेरा साष्टांग दण्डवत है ।(९)

कश्यैकस्य कुमंडलं हि शिरशः शेषश्य देशेस्थितं ।
यस्येदं फणिनः सहस्त्रशिरसां सिद्धार्थवद्राजते ॥
सोप्यस्यैश्च सहस्त्रशः प्रतिदिनं नूत्नानि यन्नामन्याह ।
सिताम्बराय सहजानंदाय तस्मै नमः ॥१०॥

परमात्मा भगवान श्रीहरि नारायण के नाभिकमल से पैदा हुए । ब्रह्माजी को संसार सृजन करने की आज्ञा दिये । तब पृथ्वी को भूमंडल को स्थिर रखने के लिये ब्रह्माजी के प्रार्थना से भगवान शेषनारायणजी को प्रेरणा किये । उनके शेषनारायण के हजार मस्तक है । उनमें से एक मस्तक पर राई के दाना के सामन सिर पर स्थिर रखे है । ऐसे समर्थ शेषजी भी अपे हजार मुखो से प्रतिदिन भगवान श्रीहरि के नवीन नवीन नामो का गुणगान करते है । तो भी परमब्रह्म परमात्मा भगवान पुरुषोत्तम नारायण के दिव्य नामो की सीमा नही है । ऐसे हमारे ईष्टदेव भगवान श्री सहजानंद स्वामी जो सदैव वस्त्र धारण करके कलियुगमें विचरते है । उनके श्री चरणो में मैं वासुदेवानंद वर्णी साष्टांग दण्डवत प्रणाम करता हूँ ।(१०)

ख्यातं धर्मकुलं गुणैर्भुविवरै यश्चाविरासीत्ततः कर्तुं ।
सद्विजतो यथा शशधर पूर्वाचलं पुष्कलः ॥
यस्यासन्मुनयोपि शुद्ध हृदय धन्याश्च सत्संगिन ।
संबन्धात्सततं समेऽस्तु सहजानंद प्रसन्नो हरिः ॥११॥

अपने ईष्टदेव भगवान श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये । वासुदेवानंद वर्णीराज उस प्रभु का कैसा गुण है । उसका वर्णन करते है । जिस प्रकार रात्रि के महान अंधकार में पर्वतराज उदायाचल हिमलय को प्रकाशित करने के लिये । पूर्णिमा के चाँद का उदय होता है । उसी प्रकार अपने कुल धर्मकुल उसमें रहे हुए श्रेष्ठ परोपकारी गुण को प्रकाशित करने के लिये । धर्म के अवतार के रुप में प्रगट अपने पिता हरिप्रसाद विप्र के उत्तम सर्वश्रेष्ठ कुल में मानव शरीर धारण करके प्रगट हुए । वे प्रभु के सम्बन्धसे विद्वानो के विद्ववता से ब्राह्मणो के ब्राह्मणत्व से सोलह कला से युक्त हो गये है । श्रीहरि योग करके बडे-बडे मुनिजनो के कल्याणकारी सद्‌गुणो से अनंतलोगो का कल्याण किये । इनके कारण सद्‌गृहस्थो का मन शुद्ध और निर्मल हुआ । उससे वे कृत कृत्य हुए । ऐसे हमारे ईष्टदेव भगवान श्री सहजानंद स्वामी हमारे उपर खुश हो । इस कारण से मैं उनकी स्तुति करता हूँ ।(११)

अतिक्षान्त्या दान्त्या मृदुलवचनैश्छादितमह ।
न्निजातकयैश्वर्यादद्विलसितनृनाट्यय गुरवे ॥
वसानाय श्वेताम्बरयुगलमावार्धियशसे । नमस्तस्मै
नित्यं हृदि भगवते ध्येयवपुषे ॥१२॥

मोक्ष की ईच्छावाले मुमुक्षु को ध्यान कराने वाले ध्यानियो और मुक्तो को महामुक्तो को और अक्षरमुक्त सभी को ध्यान करे योग्य ऐसे परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री कृष्ण पुरुषोत्तमनारायण का दिव्य स्वरुप कैसा अपने ध्यान में दिखाई देता हूँ । उसको कुछ झलक इस श्लोक में मिलती है । अपने आश्रित भक्तो के उपर जिसके हृदय में अतिशय क्षमा का भाव भरा है । उसी

प्रकार संसार के दुखी याचक जीवो के उपर अति उदारता से मन माँगा वरदान देना । तथा अमृत जैसे वाणी से ह्रदय में शांति देते है । उनके ऐश्वर्य की कोई कल्पना नही कर सकता है । ऐसे अपार शक्ति के साथ मनुष्य शरीर धारण करके जब संसार में विचरण करते है । उस समय भी साधारण मनुष्य की तरह अति पवित्र और स्वच्छ और शांति प्रदान करने वाला सफेद वस्त्र सदैव धारण करते है । वे दो प्रकाश के वस्त्र अंग वस्त्र और उतरिय वस्त्र दर्शन करने वाले को यश तथा निष्कलंक कीर्ति का प्रसार करता है । ऐसे मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरुप को मै अपने ह्रदय में ध्यान करता हूँ ।(१२)

के सार रुप में श्रीहरि ने अपने करकमलो से लिखे जिसे शिक्षापत्री कहा जाता है।

चातुर्मास के विशेष नियम सम्बन्धमें जो आज्ञा किये है । पुराणो को देखे तो अधिक विस्तृत अनेक कथा में लिखी गई है। उसमें से एक प्रसंग के माध्यम से चात्रुमास के बारे में विशेष नियमो का रहस्य का अर्थ जाने । जिसके द्वारा चातुर्मास में विशेष नियम रखने हेतु आकर्षण अवश्य आयेगा।

चातुर्मास की शुरुआत अषाढ सुदी एकादशी से होता

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

चातुर्मास

है। यदि यहाँ भूल जाये तो बारस या पूर्णिमा से चालु कर सकते है । उसकी पूर्णाहुति कार्तिक सुद द्वादशी के दिन किया जाता है।

चातुर्मास की कथाओ का विष्णुपुराण आदि शास्त्रो में विशेष गरिमा बताई गई है । उसमें खान-पान का संयम नियम की प्रधानता है। जैसे की श्रावण मास में शाक-भाजी, भाद्रपद महीने में (भादो) दही, आश्विन मास में दूध, कार्तिक मास में दलहन (द्विदल) का त्याग करना चाहिए । चार वर्ण तथा चार आश्रम के सभी मानवो को चातुर्मास के समय बैगन, अधिक बीज वाली सब्जियाँ तथा बीज विहीन फल का त्याग करना चाहिए। भूने हुए अन्न, चना, मसूर दाल, तरबूज – मूली – मोगरी का त्याग करना चाहिए।

नियम : चारपाई पर नही सोना चाहिए। भूमि शयन करना चाहिए । भूमि के उपर बैठकर भोजन करना चाहिए । क्षौरकर्म (बाल काटना) नही करना चाहिए । पान नही खाना चाहिए। दूध-दहीं-घी, गुड का त्याग का नियम लेना चाहिए।

साथ में भक्ति सम्बन्धी नियमो का भी अधीक

अपने ईष्टदेव श्री सहजानंद स्वामी के स्वहस्त द्वारा लिखी गई शिक्षापत्री श्लोक नं. ७६, ७७, ७८ में चातुर्मास के बारे में लिखा है। ''हमारे सभी सत्संगि को चातुर्मास के समय विशेष नियम धारण करना चाहिए तथा जो व्यक्ति असमर्थ हो तो उसे एक सावन महीने में विशेष नियम रखना चाहिए । वह भगवान की कथा का श्रवण करना चाहिए । तथा कथा का वाचन करना चाहिए। भगवान के गुण का कीर्तन करना चाहिए । पंचामृत स्नान करके भगवान की महापूजा करना तथा भगवान के मंत्र का जाप करना चाहिए। तथा स्त्रोत का पाठ करना चाहिए । भगवान की प्रदिक्षणा करनी चाहिए। भगवान को साष्टांग प्रणाम करना चाहिए।इन आठ प्रकार के नियम को हम लोग उत्तम मानते है। इन नियमो में से एक नियम वर्षा में अवश्य व्यक्ति को करना चाहिए।

आदि अनादि प्राचीन काल में ऋषि मुनियो ने जो पुराणो उपनिषदो – संहिताओ के रुप में शास्त्र लिखे गये है। उसमे से अति आवश्यक कलियुग के मानव के लिये अति आवश्यक उनका अनुसरण कर सके। ऐसे सिद्धान्तो धर्मो

महत्व होता है। नियम से पुराण तथा संहिता पाठ और वेद पाठ, भगवान की कथा का श्रवण करना, भगवान की महापूजा, शरीरकी शक्ति अनुसार प्रदिक्षणा तथा दंडवत, प्रतिदिन एक हजार तुलसी पत्र द्वारा भगवान का पूजन-यह सब चातुर्मास सम्बन्धी व्रत है।

चातुर्मास की महिमा के बारे में शास्त्रो में कथा लिखी गयी है। इस संसार को परमब्रह्म परमात्माने त्रिगुणात्मक शक्ति के द्वारा बनाये है। भगवान सत-रज-तम गुणो को स्वीकार करके ब्रह्मा-विष्णु, शिव त्रिदेव रुप धारण करके पूरे ब्रह्मांड की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की तीनो कार्यो को अलग अलग शक्तियो द्वारा करते है। ब्रह्माजी उत्पत्ति का कार्य करते हैं। पालन का कार्य विष्णु भगवान करते है। महाकाल महादेव संहार का कार्य करते है। सब तत्व मिल कर तीनो देवो एक है। केवल अलग-अलग रुप धारण करके समस्त संसार का कार्य करते है।

श्रीमद् भागवत महापुराण अष्टम स्कंधमें वामन चरित्र की कथा का प्रसंग है। भगवान श्री नारायण वामन अवतार धारण करके दैत्याधिराज राजा बलि के पास से तीन पग में पृथ्वी माँगने के बाद उन्हे सुतललोक में स्थान दिये थे। उस समय बलिराजाने वरदान माँगा कि आप हमारे घर के द्वार पर हमेशा रक्षा करेगे। आने वाले मन्वंतर में बलिराजा इन्द्र के पद पर स्वर्ग में राजगद्दी पर बैठे। तब तक श्रीहरि के स्वरन त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश बलिराजा के द्वारपालक बनकर रक्षा करते है। चार-चार महीना त्रिदेव के सूतल लोक में भक्त के सानिध्य में रहकर चार महीने आराम करते है। अर्थात् विष्णु भगवान ग्रीष्म ऋतु में बलि की सेवा करके वर्षा ऋतु में चातुर्मास क्षीर सागर के किनरे शेष शैया के उपर शयन करते है। अषाढ की एकादशी से लेकर कार्तिक महीने के सुद एकादसी तक श्री विष्णु भगवान योग निद्रा में आराम करते है।

ऋषियो के मतानुसार जब संसार के पालनहार श्री विष्णु शयन करते है। उस समय जिम्मेदारी ऋषियो मुनियो - संतो - गाय - ब्राह्मण महात्मा, भक्त थता समस्त समाज के उपर आने वाले चातुर्मास में जप, तप, व्रत, दान, पुण्य, सत्कर्म के तपो बल द्वारा जगत का पालन-पोषण होता है।

पुण्य बल के प्रताप से समस्त संसार का पालन जीवन की मूलभूत आवश्यकताये, जीव-प्राणी में विना भेद भाव के जिस प्रकार परम पिता विष्णुजी करते है। उसी प्रकार मनुज शरीरधारी होने के कारण उनकी संतान के लिये जाति धर्म, देश लिंग वेश का भेदभाव छोडकर समस्त संसार के पोषण के लिये प्रत्येक मनुष्य को चातुर्मास अवश्य करना चाहिए। जो मानव जगत में संचालन में सहायता हेतु विशेष नियम लेकर जप, तप, व्रत, दान, पुण्य, कर्म करते है। उसे विष्णु श्रीहरि निज संतान मानकर उसकी सभी मनोकामना पूर्ण करते है। इस लिये शास्त्र ज्ञाता कहते है कि चातुर्मास में विशेष प्रतिज्ञा लेने से अधिक फल मिलता है। निर्णय सिंधु - धर्मसिंधु आदि ग्रन्थो में अषाढ सुद एकादशी से लेकर कार्तिक सुद एकादशी तक चातुर्मास करना चाहिए। देव शयनी एकादशी से लेकर देव उठी एकादशी तक चातुर्मास माना जाता है।

निर्णय सिन्धु के मतानुसार प्रत्येक मानव कोई शैव उपासक हो - वैष्णव हो शाक्त हो, सूर्य उपासक हो गणपति उपासक हो सभी धर्म, सम्प्रदाय के मानने वालो को चातुर्मास विशेष नियम धारण करके कठिन से कठिन व्रत, तप, साधना करनी चाहिए।

चातुर्मास में जो नियम पालता है। वह सूर्य के समान तेजस्वी बनकर ईष्ट को प्राप्त करता है।

चातुर्मास में देवशयनी एकादशी के बाद सांसारिक - सामाजित कार्यो को गौण करके आध्यात्मिक कार्य की प्रधानता देनी चाहिए। अन्य कार्य का प्रारम्भ निषेधहै।

भगवान श्रीहरि जब शेष शैया पर योग निद्रा में आराम करते है तब जगदंबा महाशक्ति लक्ष्मी सेवा में लगी रहती है। इस चातुर्मास काल में कोई व्यक्ति जप, तप, व्रत, दान, पुण्य विशेष नियम में रहकर करता है। तो उसके उपर महालक्ष्मी की विशेष कृपा करती है। उसे यश कीर्ति, सफलता, सिद्धि, प्रसिद्धि देवी कृपा से प्राप्त होती है।

श्रीहरि की योग निद्रा काल मनुष्य के लिये महत्व का समय होता है। उसमें चातुर्मास की एकादशी का विशेष महत्व है।

चातुर्मास के अर्न्तगत श्रावण मास के बारे में भगवान भोले नाथ सदासिव महादेवजी को बेल के फूते से अति प्रेम से पूजा-अभिषेक करना चाहिए। इसके उपर श्रीहरि विष्णु भगवान खुश रहते है।

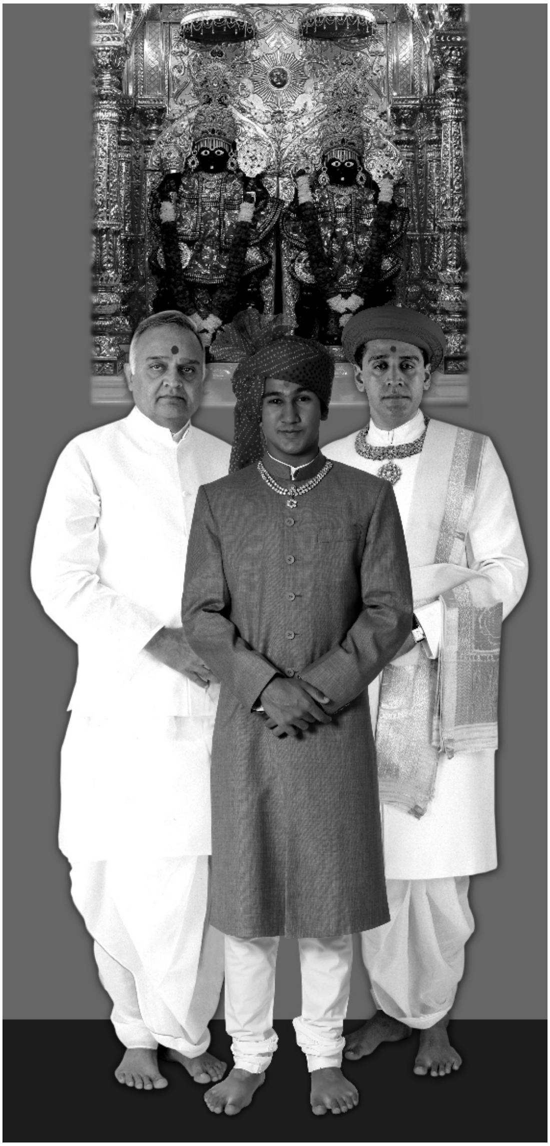

श्रीहरि के तीन अपर स्वरुपो के मुख से गुरु पूर्णिमा (२०२०) संदेशरुपी आशीर्वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अहमदाबाद (कालुपुर) मंदिर दिनांक ५-७-२०२० प.पू. बड़े महाराजश्री : आज गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर समप्रदाय के छोटे बड़े सभी सत्संगियो को हमारे तरफ से शुभ आशीर्वाद-शुभाशिष के साथ धन्यवाद । हमारी नजर मे सच्चा और आदर्श गुरु यदि किसी को कहना हो तो रामानंद स्वामी को कह सकते है। क्योंकि वे स्वयं सक्षम होने के बाद भी आगे नही आये । स्वयं महाराज को पहचाने तथा दूसरो को पहचाने की प्रेरणा दिये । महाराजकी महिमा को दूसरो को समझाने का प्रयास किये । इसलिये में आग्रह पूर्वक कहता हूँ कि में डुगडुगी बजाने वाला हूँ । वेश को जानने वाले तो श्रीजी महाराज है । आदर्श शिष्य स्वयं श्रीजी महाराज है । वे अपनी अलौकिक शक्ति छिपाकर रामानंद स्वामी के साथ रहे । वैसे मुक्तानंद स्वामी Senior (उम्र से अग्रताक्रम में) थे । उनकी मर्यादा रखते थे । स्वयं भगवान थे । लेकिन बात आज इसलिये कहे है कि जो भगवान को महाराज से परिचय कराये । वही सच्चा गुरु है । शेष अपने को पहचानना हो तो ये दम्भी गुरु है ।

आज के दिन श्री नरनारायणदेव की निष्ठा दृढ करे । यही महाराज के चरणो में प्रार्थना है ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : आज के पावन दिन पर गाँव से लेकर शहर तक तथा विदेश में रहने वाले सभी सत्संगि भक्तो को जय स्वामिनारायण । वर्तमान समय में कोरोना वायरस महारारी के समय में हम सब मंदिर से दूर रहकर भक्ति-भजन करके नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा बनाये रखे । नरनारायणदेव का पूर्ण विश्वास श्रद्धा, निष्ठा के साथ आप सभी धैर्य बनाये है। आप का तथा आपके परिवार का स्वास्थ्य उत्तम रहे। और हम सब के हृदय में निष्ठा, भजन, भक्ति का बल प्रतिदिन बढे। यही महाराज के चरणो में प्रार्थना है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री : गाँव-शहर तथा अति दूर विदेश में निवास करने वाले बच्चो से लेकर वृद्धो तक प्रत्येक सत्संगि को आज के पावन पर्व का अभिनंदन विशेष करके नरनारायणदेव से प्रार्थना है कि आप सभी का जो देव के प्रति निष्ठा ममता और मंदिर के प्रति अपनापन है। यह प्रतिदिन वृद्धि करे। हमे ऐसा प्रयास करना है। इसके लिये महाराज आशीर्वाद देने वाले है। संसार के कोने-कोने में निवास करने वाले सत्संगियो को यह संदेश है। हमारा एक ही सिद्धान्त और रहेगा कि हम सब देव का बनकर रहे। बड़े बापजी भी यही बात सिखाये है। यदि देव के बनकर रहेगे तों सब कुछ प्राप्त होगा। दत्तात्रेय भगवानने २४ गुरु बनाये थे। उनमें से कौन सा गुण ग्रहण करे ऐसी दृष्टिहोनी चाहिए। आँख खुली रखकर देखेगे तो काफी कुछ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन देव के प्रति निष्ठा और महाराज द्वारा बनाये गये सिद्धान्त का पालन अपना उत्तरदायित्व बनता है। महाराज द्वारा स्थापित परम्परा वृद्धो के द्वारा दी दई विरासत का संरक्षण करना अपना मौलिक धर्म है। ऐसा मैं मानता हूँ।

कोविड-१९ महामारी के कारण अधिकतर भक्त लोग मंदिर नही आ पा रहे है। लेकिन इस विषम समय में आप सब के हृदय में देव की शक्ति है। यह शक्ति रखियेगा । कुछ समय बाद मंदिर में प्रणाली पूर्वक दर्शन करने का अवसर मिलेगा। आप सभी को इसीकी सूचना दी जायेगी। धैर्य रखे देव हम सब के हृदय में विराजमान है। महाराजने भी कहा है कि यहाँ (मुख्य मंदिरमां) वही देव आप के पूजा घर और गाँव के मंदिर में भी है। ऐसा ही माने। यह ज्ञान अपने वंश-वारिस को देना है। ऐसा मैं मानता हूँ।

आज के पावन दिवस पर कोई दूसरा कार्य क्रर रखा नही है। हम तीनो ने देव का दर्शन किये। और दर्शन में सब कुछ आ गया। आप लोगो के प्रति भी दर्शन किये है। तभी यह प्रार्थना किये है। आप सभी हमेशा स्वस्थ रहे। तथा विकास करे। भगवान के बनकर रहे। देव के प्रति निष्ठा होने पर शरीर में प्रभु का निवास बना रहता है। आप सभी को महाराज शक्ति दे। यही नरनारायणदेव के चरणो में वंदना किये है।

जिसने इस धर्मकुल को पहचाना है। श्रीजी महाराज के वचनानुसार गुरु बनाया है। वे त्यागी गृहस्थ महान है। वड़े लोगो का यह बड़म्पन है। वे अपे मुह से बड़ाई नही करते है। अपने सब के गुरु श्रीजी महाराज और ईष्टदेव भी अपने आश्रितो को आशीर्वाद प्रदान करते है। वैसे इस कलियुग में अपने को गुरु सद्द्ष लोगो का काफिला निकला है। इन लोगो से दूर रहने में अच्छाई है। सोसल मीडिया - मोबाईल, टी.वी. वर्तमान समाचार पत्र का मर्यादित औऱ विवेकपूर्वक प्रयोग करना चाहिए। क्योकि सही गलत अपनी बात को रखने के लिये सभी आतुर है। औऱ शास्त्र मूल सम्प्रदाय द्वारा प्रकाशित विशेषकर सनातन के दो धर्मवंशी आचार्यश्री के आज्ञा-आशीर्वाद वाले पत्र को पढने और सुनने का आग्रह रखे। नही तो कल्याण के मार्ग से हट जायेगे जो मार्ग श्रीहरि द्वारा कल्याण के लिये बनाया गया है।

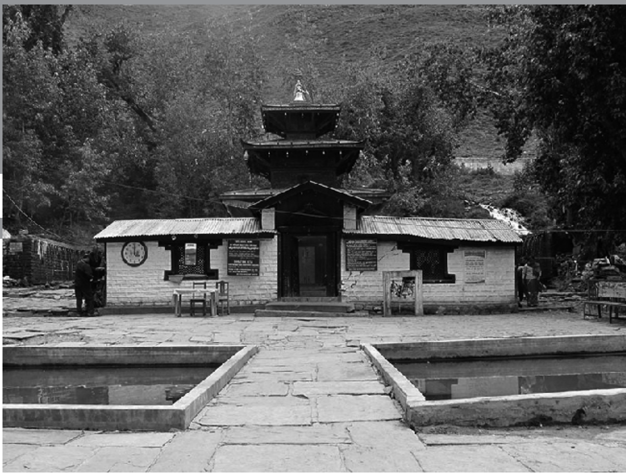

पुल्हाश्रम की यात्रा अर्थात जीवन की सर्वश्रेष्ठ यात्रा

- गोरधनभाई ह. सुथार (मोडासा)

पुल्हाश्रम (मुक्तिनाथधाम) नाम सुनकर मन डोलने लगता है। जो यात्रीगण दर्शन करके आ गये है। उनसे सुने .... यात्रा कितनी कठिन है । इसका पता चल जायेगा । तुलनात्मक रुप से यात्रा सरल हुई है। लेकिन नीलकंठ वर्णी के रुप में महाराज जब यात्रा किये होगे । तब के समय की कल्पना करने पर रोये खडे हो जाये ऐसी जगह है। मेरे हिसाब से यमुनोत्री या केदानाथ की यात्रा पुल्हाश्रम से सरल लगती है।

पुल्हाश्रम जाने के लिये निस्चय किया तब दिमाग में भयावह रास्ता की कल्पना आती है। चोटियो पर बने रास्ते, बगल मे गहरी घाटी, बहती नदी का किनारा पोखरा से जोम सोम जाना ।झरना, जल प्रपात और वर्षा का अनुभव भी।

पोखरा से जोम सोम लगभग १७० कि.मी. के भय जनक रास्ते पर है। यह मूल बात है। पहाड के किनारे बनाये गये। रास्ते के उपर (लेण्ड स्केप) चट्टाने गिरजाये। वह कहा नही जा सकता है । कुछ-कुछ अन्तराल पर हिमालय के इस पर्वत की चोटियो से सहस्त्र धाराये टपकती है। कीचड वाला रास्ता होता है । उसमें वर्षा का पानी आ जाये तो पानी की धारा में वह सकते है। रास्ते में पाँस से पचास फुटके गड्ढे पड जाते है। कभी दो घंटे तो कभी आठ से दश घंटे तक रास्ता रोक दिया जाता है । रास्ते में ठंडा और चाय काफी के सिवाय.... (मांसाहारी) खाने को मिले उसकी कल्पना करना ही गलत है। आप के पास सूखे मेवे से भूख मिटाने का रास्ता है।

छोटे बडे पत्थर और कीचड वाले रास्ते पर जीव। बस हिचकोले खाली चलती है। एक ही ग्रुप के हो तो जीप के आगे अदला-बदली करके बैठ सकते है । बार-बार सीट बदलकर १० से १२ घंटे में जोम सोम पहुंचे।

जोम सोम पहुँचते ही ऐसा लगा कि किसी मे कमर और पैर का अधमरा कर दिया है । जोमसोम पहुंचते ही भोजन विचार बदल कर मात्र गद्दे या चार पाई पर गहन नींद के अलावा कुछ विचार नही आता है।

लेकिन लाख निराशा में अमर आशा छिपी रहती है । फिर भी जोमसोम में अपने पू. संत स्वामी (कालुपुर मंदिर) वर्षो से पुलहाश्रम की यात्रा करने वाले यात्रियो को सोने की सुविधा प्रदान करते है । यदि हम भोजन बनाना चाहे तो रसोई गैस खाने के सामान को देने का पूरा प्रयास करते है। डूबते को तिनका सहारा इस आशावाद से अनुभव आता है।

प्रातः शीध्रता से तैयार होकर जोम सोम से २० किमी साधन से जाना पडता है। पार्किंग में साधन रखकर १ से २ किमी. शक्ति हो तो पर्वत उपर चलकर नही तो घोडा के उपर सवारी का आनंद लेते है। जाने के बाद ऐसा लगे मौसम बदल सकता है तो सर्व प्रथम मुक्तिनाथ भगवान का तथा महाराज की तपोभूमि जहाँ पर छतरी चरणारविंद है। उसका दर्शन करके जोम सोम वापस आ जाना चाहिए।

घोडे हमको पचास - साँठ सीढ़ी पहले ही उतार देता है। इतनी सीढीयाँ तो स्वयं चढनी पडती है। जहाँ पर मुक्तिनाथ (नारायण भगवान) भगवान का सुंदर कलात्मक लकडी का ऊँचा मंदिर है। मूर्ति अलौकिक, आनंददायक है। दर्शन करते ही ह्रदय में शांति का अनुभव होता है।

मंदिर के प्रांगण में दो बड़े कुंड है । सर्व प्रथम इस दो कुंड में स्नान करके १०८ गौमुक धारा में स्नान करने का अनुभव करना १ कुंड में उतरकर स्नान करने के पश्चात पड़ा है कि नही उसका अवलोकन आवश्यक है । ठंडा पानी नानी की याद करा देता है।

महाराज की कृपा होने पर वर्षा रोक नही डालती है । आकाश स्वच्छ सूरज चमकता हुआ । ठंडी भी कम लगती है । श्रद्धा पूरी करने का लाभ मिल जाता है । कम आक्सीजन वाली इस जगह पर कपूर साथ रखने से श्वास की तकलीफ से बच सकते है । किसी-किसी को आक्सीजन की आवश्यकता पड जाती है । छोटे आक्सीजन के सिलन्डर को रख लेना उचित होता है।

मुक्तिनाथ का दर्शन करे । वही निकट में तीन फुट के बाद....... नीलकंठवर्णी की तपस्या स्थली भी है । कालुपुर श्री नरनारायणधेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आछार्य महाराजश्री की आज्ञा से इस जगह पर संगेमरमकी सुंदर छत्री बनाकर भगवान के चरणारविंद और तप करते नीलकंठवर्णी की मूर्ति स्थापित है । इस स्थान पर जाकर आनंद की सीमा नही रहती है । लगता है...... साक्षात् अक्षरधाम मे आये हो । ऐसा हृदय में अनुभव आता है । इस स्थळ के वर्णन हेतु शब्दो की कमी है । वाणी को विराम देना पडता है । इतना ही कह सकते है कि महाराज की पूर्ण कृपा और चार हाथ नही हजार हाथ वाले के कारण इस तपोभूमि पर आ सकते है । आप अपने को भूल जायेगे । मात्र भगवान सिवाय .... स्वामिनारायण .... स्वामिनारायण के सिवाय कुछ नही याद आता है।

नीलकंठवर्णी चरण अरविंद की प्रदक्षिणा किये, जन मंगलका स्त्रोत पढे, माला फेरे, भगवान को सूखे मेवे का भोग लगाये । आरती करने का आनंद प्राप्त किये । भगवान न जाने कब फिर इस जगह पर लायेगे यही सोचते आये है । भगवान के चरणरज का लाभ लेने के लिये दंडवत प्रणाम किये । हृदयमें आनंद की कोई सीमा नही थी ।

अन्य यात्रा स्थल की जगह यहाँ भीड-भाड नही थी । क्योकि यहाँ बौद्ध धर्म का महत्व अधिक है । यहाँ पर स्वामिनारायण सम्प्रदाय के सत्संगि के अलावा कोई शायद ही आता हो ।

लोक मुख से सुने थे । कि यात्रा कठिन है । जिसका कही-कही पर अनुभव भी हुआ । सुनी बातो के आधार पर मन डर जाता है । साहस बनाकर सिद्धि प्राप्त करे तो आनंद प्राप्त होता है । गुड का मीठापन गुड खाने से पता चलता है । इस प्रकार शुद्ध मन एवं श्रद्धा से जाये तो महाराज मुसीबतो को दूर करके भक्तो के आगमन को स्वीकृति देने के लिये तैयार रहते है । ऐसा अनुभव अवश्य प्राप्त हुआ ।

जीवन में एकबार अवश्य इस यात्रा को करके धन्य हो जाना चाहिए । वह भी जीप/बस में जाने पर वन्यजीव, बहते झरने, टपकती सहस्त्र घाटाये, घाटी गड्डे ऊँचा-नीचा पथरिला कीचड़ युक्त मार्ग का अनुभव अवश्य प्राप्त होगा ।

यदि अच्छे लोगो के साथ मिले तो यहाँ पर अक्षरधाम का सुख यहाँ अनुभव कर सकते है । यह अवश्य ही होगा !!

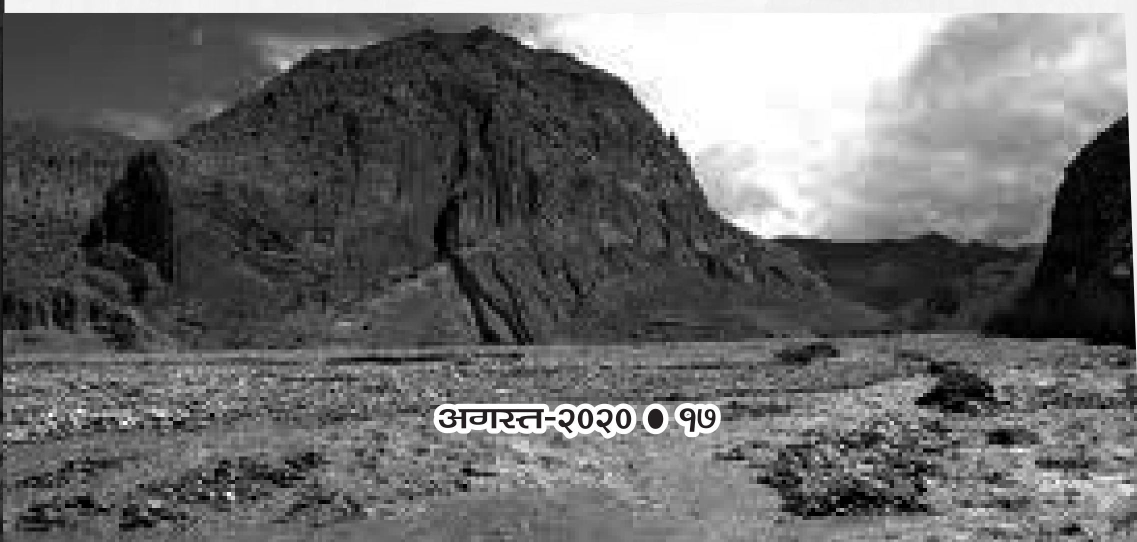

"म्यूजियम को देखने नही म्युजियम के दर्शन हेतु जाना है"

– अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने अहमदाबाद में श्री स्वामिनारायण म्यूजियम बनाकर कमाल किये है। क्योंकि यह म्यूजियम मात्र नही ''दूसरा ही कुछ है।''

प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एक ऐसे व्यक्ति विशेष है। जिनके पास बैठे रहने पर बातचीत न करने पर भी ऐसा समय व्यतीत हो जाता है कि जैसे रेत की घडी से समय बीत जाता है। यह अपने को पता नही चलता है। उनके साथ बात करने विचारो का आपस में लेन-देन करे तो उनका प्रतिभाव जो होता है। ''विशेष वाक्य'' बन जाता है। पत्थर की लकीर के समान प्रतिभाव होता है।

जैसे कि हम चार हरिभक्त उनके सामने म्यूजियम में बात-चीत कर रहे थे। उनमें से एक हरिभक्त आने का कारण बताया। पूज्य बड़े महाराजश्री से कहा कि ''बापजी ! हमारी बहन अमेरिका से आई है। उसे म्यूजियम देखना है। पू. महाराजजी तत्काल बोले कि म्यूजियम देखने के लिये नही म्यूजियम का दर्शन करने की बात कहो।''

इस सरल प्रतिभाव में कितना रहस्य छिपा है। क्योकि श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में किसी जगह पर जाये। तो श्रीजी महाराज और श्रीहरि समकालीन सभी वस्तुए श्रीजी की प्रत्यक्षता का अनुभव प्रदान करती है।

प्रतिदिन मंदिर में श्रीहरि को देखने जाते है, श्रीहरि के दर्शन हेतु जाते है। सही है ? उसी प्रकार यहाँ श्री स्वामिनारायण में भी श्रीजीका दर्शन करने जाते है। ऐसा भाव उत्पन्न होता है।

उनका सम्बल देखने पर वहेलाल की वखतबा झाँसी की रानी बनकर गाँव के बाहर ललकार कर शत्रुओ को डरा दिया। इस तरह का अनुभव होता है।

म्यूजियम में स्थित प्रत्येक वस्तु में इसी तरह की सजिविता (Liviliners) मिलती है ? और यह तो है भी श्री स्वामिनारायण म्यूजियम की विशेषता।

अब जब कभी भी श्री स्वामिनारायण म्यूजियम देखने जाय तब म्यूजियम के दर्शन भाव से जाये। इस भाव को भूले नही !

- श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद कोठार काम हेतु पू. महंत स्वामी और कोठारी स्वामी – मोबाईल : ९३१३७१९२३२
- श्री स्वामिनारायण मासिक के कार्यहेतु – मोबाईल : ९३१३७०६०९५
- सम्प्रदाय के सर्वोपरिधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया सम्पर्क हेतु – मोबाईल : ७००७५५१५५१
- श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (वासणा) का नया मोबाईल : ९९७९८६६०१२, ९९७९८६६०११
- श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या में सम्पर्क हेतु महंत स्वामी-कोठारी स्वामी – मोबाईल : ९१६१५४३०९९

बीते हुए जुलाई-२०२० के अंक में सुधार हेतु मूली के संत के अक्षरवास की तिथि में प्रेस दोष होने के कारण जेठ सुद-१२ के स्थान पर जेठ वद-१ एकम् सुधार कर पढने की कृपा करे।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

- प्रफुल खरसाणी

पृथ्वी पर किसी भी जीवन काल के बीच इस तरह का समय कभी नही आया था । जैसा कि वर्तमान समय में समय खराब चल रहा है। लोगो को अपने घर में ही डर लग रहा है। वैसे भी मनुष्य-मनुष्य की बीच दूरियाँ बढ रही थी । अब कोरना के कारण और हो गया है। उसी दूरी का सुंदर नाम ''सोशीयल डिसटेन्सींग'' रखा गया है।

किसी भी जीव का पृथ्वी पर अवतरण से पूर्व प्रभु उसकी व्यवस्था बना देते है । उसके जीवन निर्वाह एवम् कार्य की चिंता उन्हे रहती है। इसी क्रम में कुछ वर्ष पहले मोबाईल और इण्टरनेट की खोज हुई है। नही तो इस लौक डाउन के समय में समय व्यतीत करना कठिन हो जाता।

इस बीच अपने श्री नरनारायणदेव के आश्रितो को नहिवत कष्ट हुआ है। यह कष्ट नही मिला कोई नही घटना नही है । कई साल पहले छप्पन का अकाल पडा था । इस समय अपने आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसाजी महाराजश्रीने अपने सभी सत्संगियो को सम्बोधित करते हुए पत्र लिखवाये थे । यदि

किसी हरिभक्त को अन्न, धन, वस्त्र की कमी या तकलीफ हो तो कालुपुर मंदिर से सम्पर्क करे । कठिन काल समाप्त हो जाने के बाद भी कोई हरिभक्त सहायता माँगने नही आया था । वही स्थिति इस समय भी सर्जित हुई है । कोई हरिभक्त सहायता लेने नही आया । उल्टे मंदिर-म्यूजियम बंद होने के कारण उसके रख-रखाव के लिये अपना नैतिक फर्ज समझकर लोगो ने धर्मादा में अच्छी सेवा दिये है ।

अपने मंदिर के सभी सदस्य (संत, पार्षद तथा कर्मचारी) के कोरोना रिपोर्ट नेगेटीव आये है । सरकार के कथनानुसार प्रत्येक संस्था के अन्दर से दो-चार केस तो पोजेटिव आये ही है । यह पहली संस्था है । यहाँ पर एक भी केस पोजिटीव नही मिला है । इश बात के लिये हम सभी को श्री नरनारायणदेव के आश्रित हरिभक्तो के लिये गौरव की बात है ।

वर्तमान समय में अपना म्यूजियम दर्शनार्थियो के लिये बंद कर दिया गया है । लेकिन प.पू. बडे महाराजश्री नियमित म्युजियम के अपने कार्यालय में अपने अमूल्य खजाना में से विडियो और चित्र इन्स्ट्राग्राम मे शेयर करके सत्संग समाज को अवगत कराके दूर से दर्शन दे रहे है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि - जुलाई-२०२०

दि. १५-०७-२०२० श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के प्रसन्नता हेतु एक हरिभक्त - महेसाना ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि - जुलाई-२०२०

रु।. १,००,०००/-	प.भ. जय टी. ब्रह्मभट्ट - अहमदाबाद ।
रु।. ५१,०००/-	प.भ. निति जानी - ह. मेघाबेन ।
रु।. ११,०००/-	प.भ. परसोत्तमभाई वी. पटेल (दासभाई) - हर्षद कोलोनी - बापुनगर ।
रु।. ५,०००/-	प.भ. मीनाबेन के. जोशी सह परिवार - बोपल ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सद्भाव के साथ समर्पण

- शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

(गतांक से प्रारम्भ.......)

ब्रह्मानंद स्वामी मुक्तानंद स्वामी से बोले स्वामी ! महाराज भक्त के प्रेम से वशीभूत होकर रोटी खाये है । लेकिन यह तो मढ है । मठ एक ऐसा अनाज है जो पेट में जाकर शांत नही रहता है । महाराज खाने लगे । क्या करेगे ? मुक्तानंद स्वामी कहते है । आप कुछ उपाय करे । जिससे महाराज खाना बंद करे । और हम लोगो को प्रसाद मिले । ब्रह्मानंद स्वामी बोले प्रयास करता हूँ । लेकिन आज मनमौजी बराबर मस्त है । माने या न भी माने ।

हँसते-हँसते ब्रह्मानंद स्वामी कहते है । महाराज ! एकवात कहूँ क्यो स्वामी इस समय कया बात करना है । अभी हमें कुछ नही सुनना है । कीर्तन करना हो ता कहो । यह मठ की रोटी खाने के बाद ही मैं आप की बात सुनेगे । महाराज आप को ज्ञात है मैं सब-नीतियो का अध्ययन किया हूँ । उसमें भोजन के लिये भी एक नीति है । आप को अकेले खाना हो तो बाहर खड़े में नही खा सकते है । घर में बैठकर खाना चाहिए । यदि आप को सभी के मध्य खाना हो तो वस्तु की प्रशंसा नही करें । सबके बीच खाते हुए आप मौन नही है । आप प्रशंसा कर रहे है । अच्छा स्वाद है । हम को कैसे ज्ञात होगा ?

"खाने को स्वाद सो तो और कुं खिलाइये ।"

खाने का स्वाद लेना हो तो दूसरे को खिलाना सीखे । महाराज ! नीति यही कहती है । मैं आप को ज्ञान नही दे रहा हूँ या तो शांत होकर खाले या हम सब को इसका प्रसाद बाँटे । ''स्वामी ! आप की नीति आप को लगे । यह रोटी सुंदर है बिना बोले रह नही सकते है । इस लिये बोल रहे है । ऐसा कहकर महाराज रोटी खाने लगे ।

ब्रह्मानंद स्वामी को ऐसा लगा कि महाराज अब रुठने वाले नही है । हमे प्रसाद मिले ऐसा लगता नही है । अब तो छीनकर लेना होगा । जो होने वाला होगा । वह हो जाये । भगवान हमारे है । हम भगवान के है । कुछ होगा तो सहन कर लूँगा । धीरे से स्वामी खडे हुए । और महाराज के पीछे से आकर देढ रोटी ले लिये । आधी रोटी प्रभु खा लिये थे । स्वामी डेढ रोटी लाकर संत समागम में बैठ गये थे । दूसरे संत उनसे प्रसाद माँगने लगे । ब्रह्मानंद स्वामी बोले और भी थाली तो दिखायी दे रही है । मगस और मोहनथाल की उसमें से प्रसाद ले लो ! यह मेरे अकेले का साहास है । इस लिये इसमें से किसी को प्रसाद नही मिलेगा । संत जान गये कि आज ब्रह्मानंद स्वामी से प्रसाद नही मिलेगा । वहाँ पर मुक्तानंद स्वामी कहते है । संत लोग आप क्यो उतावले हो ? मुक्तानंद स्वामी की प्रकृति गंगा जल की तरह शांत है । स्वामी कहते है । ''संतो ! ब्रह्मानंद स्वामी तो सत्संग की माँ है । यह बच्चो को दिये बिना क्या खायेगे ? ब्रह्मानंद को लगा अब प्रसाद देना चाहिए । और उस रोटी के टुकडे टुकडे किये । सभा में बैटे सभी संतो और हरिभक्तो को एक-एक टुकडा प्रसाद दिये ।

स्वामिनारायण भगवान जीवन भगत से कहते है । ''भक्तराज देखो ! आप का कार्य हो गया । देखो आप के दो रोटी में से हमने, संत तथा हरिभक्त सभी ने खा लिया । आप की रसोई हो गई । मात्र दो रोटी से भगवान जीवन भगत की प्रशंसा करते है । जीवन भगत के मन में ऐसा हुआ । इसमें मेरा कुछ भी सहयोग नही है । मेरी पत्नीने कहा इसलिये हम लाये ? नही तो मैं हिम्मत हार गया था । घर में अवश्य गरीबी है । लेकिन पत्नी ने इज्जत रख लिया । उसके बनाये दो रोटी भगवान, हरिभक्त, संत लोग खाये । धन्य प्रभु यह आपकी हमारे उपर विशेष कृपा है । भगवान जिसकी रोटी खाते है । वह गरीब नही रह सकता है । जैसे सुदामा के दो मुठ्ठी चावल खाने से बंगला तैयार हो गया । इस प्रकार श्रीजी महाराजने भी जीवण भगत को जेतलपुर छोडकर अहमदाबाद लाये । कुछ समय में सुखी हो गये ।

मित्रो ! इसमें इतना हीविचार करना है । मठ के स्वाद के बारे में हम सभी जानते है । यह भगवान को भी ज्ञात है । आप जो कुछ भी करे भगवान को भोग लगाये, दर्शन करे, भजन करे, कथा में आये तो भाव से आये । भगवान को आनंद मिलेगा । जो कुछ करे पूरे भाव से करे । प्रेम से करे । किसी को दिखाने हेतु से नही करे । भगवान अधिक खुश होगे । भक्ति का दूसरा नाम भाव है . भाव न रहने पर वह फलहीन हो जाता है । भाव होने पर आप की सारे क्रिया भक्ति रुप में बदल जाती है ।

•

मूर्ख से मित्रता नहीं करनी चाहिए

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

सुख और दुख जीवन के भाग है। फिर भी दोनो की विषयो पर आधारित है। सज्जन की मित्रता, अच्छा पाठन, संत मिलन से सुख के रास्ते प्राप्त होते है। जब कि दुण्ट से मित्रता, खराब पाठन, खराब की संगत द्वारा दुख प्राप्ति होता है। मूर्ख तथा विवेकहीन के साथ मित्रता करने पर कैसे कष्ट सहन करना पडता है। इस बात को पढकर सरलता से समझ सकते है।

एक विशाल जंगल था। आप को ज्ञात ही है कि उस जंगल में हिंसक प्राणी जैसे सिंह, वाघ, भालू, हाथी, चीता होते है। तो उसमें छोटे प्राणीभी जैसे खरगोश, हिरण, गधा, ऊट, भैंस इत्यादि भी होते है। प्रायः प्राणी आठ-दस संख्या के समूह में रहते है। उसमें से एक गधा अपने मन का मौजी था। जो अकेला रहता था। अपने ईच्छानुसार कभी जंगल में तो कभी नजदीक के गाँव में विचरण करता था।

एक समय की बात है। इस गधे से ऊँट से मित्रता हो गई। ऊँट तो अपने झूंड में था। लेकिन गधे की मित्रता के कारण अपने संगठन को छोडकर गधे के साथ रहने लगा। जो देखे उसे आश्चर्य हो। ऊँट की गधे के साथ मित्रता है।

एक बार दोनो जंगल में धुम रहे थे। तभी गधे ने ऊंट से कहा ! भाई आप को पता है ? इस जंगल के किनारे एक गाँव है। गाँव के खेत में हरी भरी फसले है। मैं कई बार वहाँ पर जाता हूँ। आप को हमारे साथ चलना है ? ऊँट सोचा हमें गाँव के खेत में नही जाना चाहिए। रखवाले के द्वारा मार खा सकते है। लेकिन गधे के साथ मित्रता हो जाने से उसे मना नही कर सका। ईच्छा न होने के बाद भी ऊँट गधे के साथ चल दिया।

जंगल से बाहर निकलने हेतु अति प्रातः दोनो चल दिये। दोपहर तक गाँव की सीमा दिखाई देने लगी। खेत को देखकर ऊँट को गधे की बात सत्य लगी। खेत में खूब फसल लहरा रही थी। सायं हो गयी। अंधेरा होने पर दोनो खेत में छिपकर बैठ गये। दोनो ने खडी फसल को आनंदपूर्वक खाये। ऊँट एकबार सोचा कि आनंद तो अवश्य मिला है लेकिन खेत के रखवाले से अवश्य मार खानी पडेगी।

ऊँट गधे से बोला-देखो मित्र आज तो आनंद लिये अच्छी बात है। अब चलो जंगल में लौट जाते है। लेकिन गधे की ईच्छा वापस जंगल में जाने की नही थी। यही नजदीक में रहते है। रोज रात्रि में खेत में आकर आनंद करेगे। ऊँट की अनिच्छा होने के बाद भी मित्रता के कारण उसके साथ रहा। कुछ दिन के बाद खडी फसल खाने का प्रतिदिन की आदत बन गई।

यह प्रतिदिन की हानी देखकर किसान भ्रम में आ गया। कि कोई खेत में प्रवेश करके फसल की हानी कर जाता है। फसल कम हो जा रही है। इसलिये इसकी चौकीदारी करनी पडेगी। चले विचार करते है। वह अपने बच्चे को खेत की चौकीदारी करने के लिये खे तमें सोने का आदेश दे दिया। किसान का लडका रात्रि में खेत पर आया। साथ में लाठी और चारपाई लेकर निगरानी करने लगा। रात में एक बजे तक देखा, बाद में सो गया। सोते ही ऊँट और गधा खेत में प्रवेश करके बैठ गये। रखवाले को देखकर ऊँट गधे से कहा कि आज देर तक रुकने लायक नही है। लेकिन गधा बात नही माना था। मान जाये तो गधा भी क्यो ? वह बोला आज तो यही रहना है। आज तो और अच्छा माहौल है। मेरा मन गाना गाने का कर रहा है। ऊँटने कहा अरे भाई रहने दो। लेकिन गधा पुनः उट से बोला ! मेरे गीत से रखवाला और गहरी नींद में से जायेगा। हम लोग और अधिक फसल को खायेगे। समझाने के बाद भी गधे ने अपना गीत अलापना प्रारम्भ कर दिया। गीत वह भी गधेका ! क्या इसमें शेष बचा ? चौकीदार जाग गया। अपने पास लाठी से ऊँट और गधे के उपर प्रहार करने लगा। कई दिनो का गुस्सा मार-मार के उतार लिया। जैसे-तैसे दोनो जान बाचकर भाग गये।

अब ऊँट को बहुत पश्चाताप आया। उसे दो भूल के कारण बहुत दुःख हुआ। प्रथम भूल धुमन्तु-मूर्ख गधे के साथ मित्रता करना दूसरी भूल खराब निर्णय में भी उसका साथ देना। गलती के बाद गधे का साथ छोड दिया। पुनः जंगल में अनपे समुदाय के साथ रहने लगा।

मित्रो ! आपने देखा, मूर्ख गधे की संगति के कारण समझदार ऊँट को अधिक मार खानी पडी थी। हमेशा एक बात याद रखे हमे ऊँट की तरह नही व्यवहार करना है।

जो भी व्यक्ति अपने माता-पिता, वृद्धो, गुरुजनो की बात नही मानते है। अपनी मनमानी से जीवन व्यतीत करते है। उसका पतन अवश्य होता है। मूर्ख व्यक्ति के साथ सज्जन व्यक्ति को कष्ट सहना पडता है। ये मूर्ख लोग अपने सामने किसी के अच्छे बात का पालन नही कर सकते है। जिससे ये दुःखी रहते है। इस लिये हमेशा याद रखे कि मित्रता हमेशा सज्जन के साथ करे। सज्जन नही मिले तो अकेले रहना हितकर है। कभी दुष्ट के साथ किसी दिन मित्रता नही करनी चाहिए।

हमारे ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान ने इसीलिये प्रतिदिन सत्पुरुष के साथ की अनुसंशा किये है। यह अनुसंशा जीवन मे लाकर धन्य बन जाये।

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) ऐकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "चार अनर्थ-चौदह दुर्गुण"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

मनुष्य का जन्म प्राप्त होने के बाद ध्यान रखना है कि भगवान के अलावा कही भी 'आसक्ति' न हो । मनुष्य जीवन का सद्उपयोग करना चाहिए । ये चार प्रकार के अनर्थ है । जो हमे भगवान से दूर करता है ।

(१) पाप जन्य अनर्थ : हम लोग कई बार लोगो को शरीर स्वस्थ होने के बाद भी गरीब होने पर वे श्रम करके पैसा कमाते है । कभी कुछ लोग इसी प्रकार के मानव भीख माँगकर या चोरी करके जीते है । ये व्यक्ति पीछले जन्म में पाप किये रहते है । इसलिये सत्य नही दिखाई देता है । भगवान की भक्ति में मन नही लगता है ।

(२) पुण्य जीवन अनर्थ : पूर्व जन्म में किये गये पुण्य के कारण अक्रूत सम्पत्ति सुख-सुविधा मिल जाती है । मनुष्य भौतिक सुख में खो जाता है । उसे मोह व्याप्त हो जाता है । सत्य का ज्ञान नही हो पाता है । मौज-शौक भक्ति-भजन से दूर कर देता है ।

(३) अपराधजनित अनर्थ : जाने-अनजाने में किसी अच्छे आदमी से अपराधहो जाता है । जिससे उसका मन परेशान रहता है । जीवन में अनुकूल समय होने के बाद भी वह भगवान की भक्ति ईच्छा पूर्वक नही कर पाता है ।

(४) प्रतिष्ठाजनित अनर्थ : इसमें व्यक्ति को बडा पद या सम्मान मिल जाता है । तो उसमें अहंकार आ जाता है । इस कारण से ईच्छानुसार भक्ति नही कर पाता है ।

तो इन चार प्रकार के अनर्थ से सदैव बचना चाहिए । दूसरी तरफ मानव के अन्दर दुर्गुण आ जाते है । जिसके कारण भजन नही हो पाता है । चौदह प्रकार के ऐसे दुर्गुण है । जो मनुष्य के अन्दर होता है । वह मनुष्य जीवित होते हुए भी मृतक समान है । क्योकि ? मनुष्य जीवित रहता है लेकिन जागृत नही होता है । अर्थात् अन्तर आत्मा मर जाती है । ऐसा व्यक्ति भगवत प्राप्ति नही कर बाता है । हम रामायण में देखते है कि अंगद रावण के दरबार में भगवान राम के संधिदूत बन कर गये थे । अंगद ने कहा कि यदि मैं चाहूँ तो रावण का वधकर सकता हूँ । लेकिन मरे को क्या मारना । अगंद को रावण के अंदर ऐसे दुर्गुण दिखाई दिये थे । जिस कारण से ऐसा कहे थे ।

(१) माँसाहारी व्यभीचारी : जो व्यक्ति माँस खाता है । व्यभिचार करता है । अर्थात् 'परस्त्रीगमन' करता है । वह भगवत प्राप्ति नही कर सकता है ।

(२) कामासक्त होना : जो व्यक्ति कामना के वशीभूत होकर जीता है । उसमें 'सदाचार' और संयम का अभाव होता है । यह भगवा को नही प्राप्त कर सकता है ।

(३) कृपण (कंजूस) : स्वयं पैसा नहीं खर्च करता है । दूसरा भी खर्च करें तो उसे कष्ट होता है । अर्थात् दूसरा व्यक्ति भगवान के निमित्त पैसा खर्च करे तो उसे अच्छा नहीं लगता है ।

(४) विमूढ : विमूढ अर्थात् विशेष मूर्ख वह मनुष्य योनि में तो पैदा हो गया है । उसे ज्ञान नही होता है ।

(५) विमुख : भगवान से विमुख अर्थात् भगवान के आज्ञा का पालन नही करना उसे विमुख कहा जाता है ।

(६) सभी की निंदा करने वाला : जो व्यक्ति अपना अवगुण नही देखता है । दूसरे की दिन-रात निंदा करें तथा दोषो को देखता रहे । वह व्यक्ति भी भगवान की प्राप्ति नहीं कर सकता है ।

(७) अयशी (अपयशी) : जिसने जीवन में ऐसा कार्य किया हो जिसके कारण घोर अपमान का सामना करता हो । माथे पर कलंक लेकर जीवित रहता है ।

(८) अति दरिद्र : जिसके जीवन में मोह की प्रधानता होती है । पैसा से गरीब नही रहता है । लेकिन उसकी द्रष्टि भौतिक सुख में रहती है । उसके जीवन भगवान सम्बन्धी सुख नही होता है । वह अति दरिद्र गरीब कहा जाता है ।

(९) अति वृध्द : अर्थात् जिसकी मानसिक अवस्था खराब होती है 'आत्मबल' कम होता है । निर्णय लेने में सक्षम नही होता है । इस कारण से भजन नही कर पाता है ।

(१०) सदैव रोगी : जिसकी शरीर हमेशा रोग ग्रस्त रहती है । वह शरीर के माध्यम से लक्ष्य तक नही जा सकता है

।जीवन के उद्देश्य को पूर्ण नही कर पाता है।

(११) सतत क्रोध: सतत क्रोधी को क्या सत्य है ? क्या असत्य है ? वह समझ नही पाता है।

(१२) वेद और शास्त्रो का विरोधी : जो वेद एवम् शास्त्रो के कथन को नही मानता है। भगवत शास्त्र पर विश्वास न हो। सत्य है या असत्य सदैव शंकाशील रहता है।

(१३) तन पोषक : जो मात्र शरीर पर ध्यान देता है। भगवान शरीर नही आत्मा को देखते है। सूर्पणखा सुंदर शरीर ले आयी थी। लेकिन भगवान राम उसके सामने देखे तक नही। शबरी अति वृद्ध थी तो भी सुंदरी कह कर बुलाये थे। और उसकी जूठी बेर खाये थे। भजन-भक्ति आत्मा को सजाती है।

(१४) अभिमानी : रावण अति अभिमान थे। भगवान साक्षात् मिले थे। फिर भी भगवत प्राप्ति नही कर सका था। इस लिये हमें ध्यान देना चाहिए कि हमारे अन्दर अभिमान नही आये।

इन चौदह दुगुर्ण युक्त व्यक्ति स्वयं जानता है। लेकिन मोह निंद्रा में रहता है। क्योंकि यही आवरण जीवित व्यक्ति को मृतक समान कर देता है। इस कारण से इन लोगो का मानव जन्म बेकार हो जाता है। अपना आत्म कल्याण नही कर पाते है। हमें ध्यान देना है कि हम भगवान के प्रति अधिक लगाव रखे। तथा अधिक से अधिक भगवान के प्रति प्रेम रखे। इस संसार में ती वस्तुए है। 'भगवान', 'जीव' और माया है। इसमें माया अलग है। हम किस तरफ जाये। यह संसार माया से रचित है। इस लिये जीवन में माया अधिक प्रभावीत है। लेकिन हमे सावधान रहना है। मान ले किसी राज्य में राजा किसी सैनिक को कुच कह नही सके। तो राज्य का क्या होगा ? स्वयं समाप्त हो जायेगा। क्योकि ? शत्रु तो राह देख रहा है। यदि हम इन्द्रिय रुपी सैनिक को अच्छा कार्य नही देगे तो माया रुपी आन्तरिक शत्रु तो रास्ता देखने बैठा ही है। विवेक बुद्धि का उपयोग करके आत्मबल के साथ प्रतिदिन पांच मिनट बैठकर विचारना चाहिए। क्योंकि ? हमारे भीतर क्या चल रहा है। यह हम जान सकते है। इस लिये हमे स्वयं को नियमित रहना पडेगा। यात्रा के अन्त में जोअपना लक्ष्य है। उसे प्रारम्भ में ही कर लेना चाहिए। हम किसी यात्रा में जाते है। तो सभी सामान याद करके रख लेते है। ताकि यात्रा में कष्ट नही मिले। और यह यात्रा तो ऐसी है कि साथ में कुछनही ले जा सकते है। सब यही पर छोड देना है। हल्के होकर जाना है। जिसके कारण जीवन के अन्तिम चरण में कष्ट नही भोगना पडे।

•

स्वामिनारायण महामंत्र

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

हे हलाहल कलियुग है, इस कलियुग में मानव जन्म सार्थक करने के लिये कल्याणकारी कई साधन है। जैस जप, तप, व्रत, दान, यज्ञ आदि कल्याणकारी साधन है। इन सभी साधनो से अच्छा ''स्वामिनारायण महामंत्र'' एक बलवान साधन है। वही सुख देता है। और संसार से पार करता है। जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त करता है। भगवान का नाम स्मरण करने मे कोई नियम-विंधी नही है। किसी प्रकार का खर्च और परिश्रम भी नही है। स्वामिनारायण नाम बच्चा भी ले सकता है। युवक, वृद्ध, उँचे-निम्न कौम के लोग तथा स्त्रीपुरुष विमार मनुष्य सभी ले सकते है। इस लिए प्रत्येक सत्संगी बहन कमर कस के भगवान के नाम का जप करें। जप करने से मन मंदिर शुद्ध और पवित्र हो जाता है। यदि मन शुद्ध होगा तो माया का नाश होगा। माया का नाश होने पर भगवान हृदय में लगातार निवास करेगे। तभी जीवन को मोक्ष प्राप्त होगा। सतयुग मे ध्यान करने से त्रेता में यज्ञ करने से, द्वापर में सेवा करने से जो फल मिलता है। वही 'कलियुग में भगवान' के नाम स्मरण से प्राप्त होता है। भगवान स्वयं नारदजी से कहे है कि मैं वैकुंठ में नही निवास करता है। मैं योगियों की हृदय में भी नही रहता है। लेकिन मेरे भक्त जहाँ पर भी मेरे नाम की धुन गाते है। वही पर मैं निवास करता हूँ। इस लिये चलते-फिरते, खाते-पीते सभी क्रिया में शुद्ध मन से स्वामिनारायण मंत्र करने पर सुख प्राप्त होता है। और उसके कई जन्मो के पाप का नाश हो जाता है।

"जे स्वामिनारायण नाम ले छे तना बधा पातक वाली दे छे,
छे नाम मारा श्रुति मां अनेक, सर्वोपरि आज गणाय एक।"

इस प्रकार भगवान के मंत्र का जाप करने से पातकी पवित्र हो जाता है। रोगी रोग से मुक्त हो जाता है। और दुःखी, दुख से मुक्त हो जाता है। राम नाम का जप करते हुए हनुमानजी समुद्ध कुछ कर लंका में प्रवेश कर गये थे। बंदरोने राम नाम लिख कर समुद्र पर पुलबना दिया जो पत्थर से निर्मित किये थे। श्रीहरि का नाम लेकर गजेन्द्र मगर मच्छ के मुख से मुक्त हुए। और परमपद को प्राप्त किये थे। इसी प्रकार प्रभु के नाम के बल से बिल्ली के बच्चे अलाव में बच गये थे। अर्थात् मटके पकाने के अलाव में बिल्ली ने अपने बच्चे रखे थे। लेकिन कुम्हार इस बात को भूल गया था। और अपने उस स्थान पर (अलाव) में आग लगा दिया था।

इसके बाद उसे बिल्ली के बच्चो की याद आई । याद आने पर कुम्हार पूरी रात प्रभु का नाम लेता रहा । श्रीहरि ने बच्चो की रक्षा किये । उन बच्चो को थोडी भी तकलीफ नही हुई ।

स्वामिनारायण महामंत्र से काले नाग का विष भी दूर किया गया है । उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । हलवद तालुका में घनश्याम नगर में एक हरिभक्त को सर्पने डंस लिया था । गाँव वाले बोले इन्हे चिकित्सालय में ले जाये । नही तो जहर पूरे शरीर में पैल जायेगा । हरिभक्तने कहा हमें कही भी न ले जाये । मंदिर में जाकर पूरी रात भगवान के सामने स्वामिनारायण मंत्र की धुन किया । सर्प का जहर उतर गया । इसलिये ये मंत्र समर्थ है ।

हम लोग प्रतिदिन २१,६०० बार श्वास लेते है । श्वासो श्वास के भगवान के नाम का स्मरण करना चाहिए । लेकिन हम लोग २४ घंटे नाम का स्मरण नही कर सकते है । २४ घंटे में एक घंटे भी भगवान के नाम का स्मरण ले तो परमात्मा को एहसास होगा कि मेरे द्वारा भेजे गये मनुष्य का जन्म सार्थक हो गया । बहने अपना कल्याण चाहती हो तो प.पू.अ.सौ. गादीवाला के सानिध्य में प्रतिज्ञा करे कि कार्य करते समय भी स्वामिनारायण, स्वामिनारायण नाम का अखंड जाप करें ।

एकबार ग्वालियर परगना में बामरोली गाँव में गिरधारी नाम का गुर्जर जाति का एक अच्छा सत्संगि, श्रीजी महाराज से मिला था । एकबार वह अपने पत्नी के साथ अपने ससुराल से स्वयं के घर के तरफ आ रहा था । लेकिन घर आते समय रास्ते में रात हो गई थी । इस लिये रास्ते में दोनो लोग एक राजपूत के घर रुके । स्त्री को देखकर राजपूत की नीयत खराब हो गई थी । अति प्रातः दोनो उठकर गाँव की तरफ प्रस्थान कर दिये । अधिक अधेरा देखकर उसकी पत्नी अपने पति से कही अभी अंधेरा अधिक है । और उस राजपूत की नजर अच्छी नही है । आप उसे अपना स्नेही मानकर वहाँ रात्रि रुके । वह खराब आचरण और बुद्धिवाला है । इस लिये रास्ते में विघन कर सकता है । अतः प्रातः चलेगे । या किसी अन्य साथी के आ जाने पर चले । स्त्री के कहने के बाद भी गिरधारी इस बात को नजर अंदाज कर दिया । पाँच गाँव के पश्चात बडी नदी आई । उस में स्नान करके पूजा पाठ किया । बाद में नास्ता करने बैठ गया । उसी समय वह राजपूत बडे घोडे के उपर बैठकर हाथ में भाला लिये हुए नजदीक तक आ गया । यह देखकर वह स्त्री अपना धर्म बचाने के लिये शंकरजी के मंदिर में छिप गयी । अंदर से दरवाजा बंद कर दिया था ।

राजपूत गिरधारी के समीप आकर उसकी छाती में भाला का वार कर दिया । इस प्रकार गिरधारी श्रीजी महाराज का नाम लेकर शरीर त्याग दिया । राजपूत मंदिर के पास जाकर कहा अरे स्त्री तुम दरवाजा खोलो, मैं तुम्हारे पति को मार दिया हूँ । तुम चिंता नही करो । ऐसे कठोर वचन सुनकर स्त्री के अन्तकरण में महादुःख पैदा हुआ । उसने तो मेरे पति को तो मार ही दिया है । शंकर भगवान से आर्तनाद के साथ प्रार्थना किया कि है शिवजी । हे भोलेनाथ ! हे दयालु ! मै आप की शरण में आई हूँ । पापी मेरे ईज्जत लूटने आया हैं । और मैं पतिव्रता हूँ । इस प्रकार रोती हुई । अपने ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के महामंत्र को उच्च स्वर में बोलने लगी । हे महाराज ! इस समय हमारी सहायता करे । नही तो मैं जीभ काट के मृत्यु का आलिंगन कर लूगी । लेकिन पतिव्रता धर्म का त्याग नही करुगी । हे महाराज ! आप कहाँ है ? उस स्त्री की पुकार सुनकर आये । तथा मद से पूर्ण राजपूत को देखकर पत्थर जैसे बना दिये । तथा महिला को अपना अलौकिक दर्शन देकर बोले । जो तुम्हारी पति मर गया है । लेकिन उसके उपर वस्त्र डालकर पाँच प्रदिक्षणा हमारे नाम स्वामिनारायण लेकर कर देना । आप के पति सजीवित हो जायेगे । इसके बाद आप दोनो घोडे पर बैठकर घर चले जाना । घर जाकर हमारी भजनम करना । उस राजपूत को हमने पथ्थर बना दिया है । उससे अब डरना मत उसका प्राषान्त हो गया है । स्त्री को विश्वास हो इसलिये खिडकी स्वयं खोलकर अदृश्य हो गये । ऐसा चमत्कार देखकर महिला शंकरजी के मंदिर से बाहर आकर जैसे श्रीजी महाराजने कहा था । वैसे अपने मृत पति के शरीर के उपर वस्त्र डालकर स्वामिनारायण - स्वामिनारायण मंत्र का अपने मुख से उच्चारण करते हुए परिक्रमा करने लगी । गिरधारी आलस छोडकर दोनो आँखे खोलकर बैठ गये । और श्रीजी महाराज की कृपा से गोलोक वैकुठ तथा श्वेतद्वीप तथा अनेक तीर्थो कैलास, अक्षरधाम की बाते अपने पत्नी को बताने लगे । श्रीजी जी बात को सुनकर दोनो खुश हो गये । राजपूत के घोडे पर बैठकर अपने गाँव आ गये । इस तरह ''स्वामिनारायण महामंत्र'' मरे को जीवन देने वाला महाप्रतापी मंत्र है ।

•

सत्संग समाचार

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के समक्ष भव्य हिंडोला दर्शन

सर्वोपरी सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने आश्रितो के कल्याण और मोक्ष के लिये सम्प्रदाय में उत्सवो की परम्परा रखे है। उस परम्परा अनुसार श्रावण मास में भगवान श्रीहरि को अनेक प्रकार के झूले (हिंडोले) में झूलाकर अलौकिक दर्शन किया जाता है। अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ द्वितीया को अपने छोटे-बडे मंदिरो में अनेक प्रकार के झूले बनाकर संत-हरिभक्त भगवान श्रीहरि को झूलाने का स्वर्णिम आनंद लेते है।

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूज्य स.गु. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणधासजी के सुंदर मार्गदर्शन और प्रेरणा से तथा कोठारी स्वामी आदि संत मंडल और एप्रोच (बापुनगर) के संत-हरिभक्तो के सुंदर प्रयास और सेवा भावना से श्रद्धा युक्त अनेक प्रकार के झूले को सुंदर रुप में सजाकर शांय ठाकुरजी को झूलाकर अपने मंदिर के वेब साइट पर दर्शन कराया गया था । वर्तमान समय में कोरोना महामारी में हरिभक्त घर बैठकर दर्शन का लाभ लेकर धन्य हुए।

(कोठारी स्वामी महापुरुषदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) द्वारा कि गई राहत सेवा यज्ञ

परमकृपालुश्री नरनारायणदेव की कृपा से, सम्प्रदाय के नींव में स्थित मानव सेवा में आदर्श अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से तथा महंत स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन के अन्दर मंदिर के स्टाफ मित्र और स्वयं सेवक हरिभक्तो द्वारा, भक्तजनो के धन, मन, धन की सेवा से कोरोना महामारी के बीच ता. २५-३-२०२० से ६-६-२०२० तक लगातार ७४ दिन तक जरुरमद लोको के लिये सुंदर सेवा यज्ञ किया गया था।

सेवा क्रिया-कलाप में ६७५०० व्यक्तियो को बटाका पौआ, फूलवडी, स्वा. खिचडी, खमण, उपमा, पुलाव इत्यादी प्रतिदिन गरमा-गरम नास्ता - प्रसाद बनाकर खिलाया गया था । २७३२० साग-सब्जी की किट तथाचावल, अरहरकी दाल, गुड, आटा, तेल, मिरचा, हल्दी, धनियाँ, जिरा इत्यादि का समावेश था। ऐसी २४०० राशन की किट जरुरतमंद लोको में बितरित किया गाय था।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी (बापूनगर) द्वारा कि गई राहत सेवा यज्ञ

परमकृपालुश्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञासे प.भ. श्री परसोत्तमभाई (दासभाई) की प्रेरणा-मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के स्वयं सेवको तथा सेवाभावी बहनो द्वारा कोरोना के वारियर्स महामारी के विपरीत समय में ता. २१-३-२० से लगातार ४२ दिन तक सेवा का यज्ञ पूर्ण किया गया था।

इसके अर्न्तगत विषमकाल में सेवा देने वाले बापुनगर, अजीत मिल, रखियाल, गोमतीपुर और कृष्णनगर विस्तार में लगे पुलिस कर्मचारियो तथा क्राईम ब्रांच के पुलिस जवानो को प्रतिदिन दोपहर मे १५० तचथा शायं १०० कुल २५० कर्मचारियो को बहनो द्वारा तैयार किये गये। गरमा-गरम भोजन प्रसाद रुप में दिये गये थे। तथा उनको प्रोत्साहित भी किया गया था। इसी के साथ ओढव पुलिस स्टेशन के क्षेत्र में जरुरतमंदर लोगो को प्रतिदिन अना का किट तथा फूड पैकेट का वितरण किया गया था।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

पवित्र श्रावण महीने में अपने अनेक मंदिरो में हिंडोला दर्शन ।

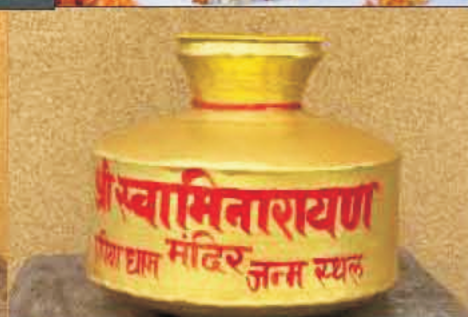

(१) ओकलेन्ड – न्यूझीलेण्ड मंदिर में ठाकुरजी का फूलो से कलात्मक श्रृंगार ।(२) जेतलपुर मंदिर में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु पूजन की आरती करते हुए संत ।

(३) ५ वी अगस्त अयोध्या में राम मंदिर शिलान्यास के अवसर पर उपयोग में ली जाने वाली श्री स्वामिनारायण भगवान के जन्म स्थळ छपैया से श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण की पवित्र मिट्टी और नारायण सरोवर का जल भेजा गया ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के केशर स्नान का दर्शन ।

पवित्र श्रावण महीने में अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के गर्भ गृह में स्थित शिवलिंग की पूजा आरती करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

कोरोना के समय में दर्शन के लिये मंदिर खोलने की तारीख कुछ दिनो में अवगत की जायेगी ।

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो से आग्रह और सुविधा के लिये, आनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की नीचे दिये गये ओफिसियल वेबसाईट पर कर सकते है ।

htpp://www.swaminarayan.in/donation

Praful Khansari